आलेख पालनेघर से वृद्धाश्रम तक... ! - पंकज त्रिवेदी

हमारे शहर में रेलवे स्टेशन के पास एक ज़माने में अंधविद्यालय की शुरुआत हुई थी और उसी में वृद्धाश्रम | मैं बचपन से उस संस्था को देखता आया हूं | संस्था का एक मुखपत्र था | जिसमें अंध बच्चे और वृद्धाश्रम के बारे में संवेदनशील बातें भी प्रकट होती थी | उस समय से मुझे वृद्धाश्रम के प्रति विचित्र संवेदना होती थी | मुझे कई सवाल होते थे कि यह सब लोग यहाँ क्यूं? समझ के साथ वृद्धाश्रम के प्रति मेरी नाराज़गी बढ़ती गई | क्यूंकि हम तो संयुक्त परिवार में रहने के आदि थे | हालांकि आज वह स्थिति नहीं है | माता-पिता को गंवाने के बाद नौकरी के चलते विभाजन करना पड़ा | आज हमारे ही बच्चों को दादाजी-दादीमां का प्यार नहीं मिलता उसीका अफसोस है |

उस वृद्धाश्रम को क़रीब पचास से ज्यादा साल हुए है | उसके बाद कई सालों तक एक भी वृद्धाश्रम नहीं था | मगर दुःख की बात यह है कि पिछले देढ़ साल में ही दो नएं वृद्धाश्रम बन गएं है | यह सब देखकर लगता है कि हमारे बुज़ुर्गों का सुख बहुत तेज़ी से छीना जा रहा है | आख़िर में 2-मई को "जीवन संध्या वृद्धाश्रम" का लोकार्पण सुप्रसिद्ध कथाकार पू. मोरारीबापु के द्वारा हुआ था | गुजरात के सुरेन्द्रनगर जिले के खोडु गांव के मूलनिवासी श्री लालाराम भोजवीयाने कई सालों तक दिल्ली में रहकर अर्थोपार्जन किया था | उनकी पत्नी के देहांत के बाद उनकी स्मृति में यह वृद्धाश्रम बनाया गया है | वह देवीपूजक जाति के है |

सुरेन्द्रनगर जिले को झालावाड़ के नाम से जाना जाता है | यहाँ के सेंकड़ो देवीपूजक दिल्ली में ज़्यादातर कलात्मक चीजों व्यापार करतें है | जिसकी न सिर्फ भारत में बल्के विदेशो में भी बड़ी मांग है | जिसमें देसी कसीदेवाली चीजें, नक्काशीदार दरवाज़े के चौखटे, खिड़कीयाँ, पिटारे, स्तंभ, चबूतरा आदि को एंटीक पीस के रुप में बेचतें थे | आधुनिक सुविधा वाले इस वृद्धाश्रम के सर्जन से लोग प्रसन्न थे | मुझे निमंत्रणकार्ड मिला तो विषाद हुआ | मैं सोचता था कि सिर्फ देढ़ साल में ही दूसरा वृद्धाश्रम? यह चिंता का विषय है | युवापीढ़ी के लिए यह प्रगति भी शर्मनाक है | हमारी समाज व्यवस्था में ऐसी क्या क़मी है? वृद्धाश्रम के खुलते दरवाज़े हमारी अंखों को क्यों नहीं खोल पाता? प्राथमिक शिक्षकों के एक सेमिनार में मैंने एक हरिजन शिक्षक को खुली चुनौती देते हुए सुना था | उसने कहा था कि हम भले ही पिछड़ी जाती के माने जातें है फिर भी कहता हूं कि हमारी जाति के एक भी वृद्ध को आप वृद्धाश्रम में देखें तो उसे मेरे घर भेज देना | मैं उनकी ज़िन्दगीभर सेवा करुंगा | मज़दूरी करके दो वक्त की रोटी कमानेवाले लोग भले ही झोंपडपट्टी में रहते हो, मगर उनका परिवार संयुक्त होता है | जब कि बड़े घरों में मा-बाप बहुत क़म दिखतें है, यही कारण है कि वृद्धाश्रमों की संख्या में दिन-ब-दिन बढ़ोतरी हो रही है |

मेरा एक मित्र है, जसवंतसिंग हरभजनसिंग उर्फ जस्सी | पंजाब के नवाँशहर के सुख्खो गाँव का मूल निवासी है और क़रीब पंद्रह सालों से

अहमदाबाद में रहतें है | खुद रिटायर्ड फौजी है और हॉटल जनपथ के मालिक है | गुजरात में विरमगॉंव और अहमदाबाद के बीच सचाणा गॉंव के रेलवे क्रोसिंग से दो किलोमीटर की दूरी पर "श्रीहरि चेरिटेबल" ट्रस्ट के वह ट्रस्टी है | इस संस्था में निवासी प्राथमिक पाठशाला और वृद्धाश्रम है | यहाँ चालीस से ज्याद वृद्धों के लिए सुविधाएं है | मैंने एकबार जसवंतसिंग से पूछा था; "दोस्त ! प्राथमिक पाठशाला तो ठीक है मगर यह वृद्धाश्रम बनाने के बारे में आपने क्यूं सोचा?"

वह मेरी बात के मर्म को समझ गएं | धीर-गंभीर होकर जस्सीभाई ने जो जवाब दिया था, उसका जवाब हमारे पास होने के बावजूद हम लाचार है, यही अहसास ने मेरी रुह को बूरी तरह छटपटाई थी | वह बोले थे; "मेरी दृष्टि से पालनेघर से ही वृद्धाश्रम की शुरुआत हो जाती है |" फिर तो कई बातें हुई हमारे बीच में मगर मुझे उनके शब्दों के तीर ने घायल कर दिया था | उनकी बात बिलकुल सही लग रही थी | दौड़धूप की ज़िन्दगी में हमारे ही बच्चों के लिए समय नहीं होता और उन्हें हमारे लिए ! हमारी नौक़री और अन्य प्रवृत्तियों के बीच बच्चों को आया की ग़ोद में या पालनेघर में छोड़ देतें है | परिणाम स्वरुप माता-पिता और बच्चों के बीच न संवाद होता है और न ही संवेदना का भावावरण बनता है | हम एक-दूसरे की अभिव्यक्ति को समजने में ग़लती करतें है और उसीके विपरित परिणाम आज वृद्धाश्रम बनकर खडें है |

हमारे पास टी.वी. है | अलग-अलग बेडरूम है | जो वास्तव में "बेड़" साबित हो रहें है | हमारे पास खोख़ला अर्वाचीन अनुकरण है यानी प्राचीनता की नक्करता तूट चुकी है | संस्कृति और सभ्यता के वाहक बनने के बजाय नकारात्मक विकार-विचार के हम आदि बनने लगें है | यह सब देखकर लगता है कि सरदार जसवंतसिंग वर्तमान को सही अर्थ में समझ रहें है | उन्हों ने कहा; "जबतक पालनेघर बंद नहीं होंगे, संयुक्त परिवार नहीं होगा और बुज़ुर्गों का प्यार बच्चों को नहीं मिलेगा तबतक वृद्धाश्रम तो रहेंगे ही ! नई पीढ़ी को किए गएं अन्याय के लिए अब वृद्धों को यह पीड़ा भुगतनी ही होगी |"

एक ओर नज़रिये से देखें तो जस्सीभाई की बात कुछ हद तक सही लगती है | मगर सभी परिवारों की स्थिति और कारण अलग भी होंगे | आख़िर हमारे ही बुज़ुर्ग दुःखी है, कहाँ जाएंगे वह? जिन्हों ने जीवनभर मेहनत करके अपने संतानों को पाला है और मुट्ठी में सुख के पतंगे लेकर उत्तरार्ध के लिए सपने देखे थे | अब समय आ गया है कि बुज़ुर्गों के साथ बैठकर युवाओं को सभी समस्याओं का हल निकालने के लिए सोचना चाहिए | सभी जाति के अगुआओं को हो सकें तो कोर्ट-कचहरी के बदले समझ और कुशलता से समाधान करवाना चाहिए | हमारी संस्कृति को आत्मसात करके धर्मग्रंथों के आधार पर चलना होगा | बच्चों के साथ बच्चे बनकर सभी को प्रेम-अमीरस पिलाकर पालना-पोसना होगा | अगर ज़रुरत पड़ी तो शिक्षा के बगैर चला लेंगे मगर संस्कार के बगैर कभी नहीं चल पाएंगा ! बच्चों को हमारे ही घर के

पालने में सूलाकर रस्सी से झूलाकर लोरी सुनाने का वक्त आ गया है | आईए, साथ मिलकर भौतिक सुख की लगाम खींचकर मौलिकता को अपनाएं | वर्ना वृद्धों के लिए हमने ही जो वृद्धाश्रम बनाएं है वोही द्वार हमारे स्वागत के लिए तैयार होंगे !!!

* * * *